St. Lawrence High School

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

Hindi Study Material (3)

Class- 10 पाठ - रामदास

Date: 05/05/2020

लेखक परिचय

दूसरे सप्तक के कवि रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसंबर 1929 में लखनऊ में हुआ था।
रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी कविता के महत्वपूर्ण स्तंभ माने जाते है। उनकी साहित्य सृजन 1946 से हुआ। उनके साहित्य में पत्रकारिता का और पत्रकारिता में साहित्य का गहरा असर प्राप्त होता है। उनकी पत्रकारिता की शुरुआत दैनिक नवजीवन (1949) से माना जाता है। सहाय जी की कविताओं में आजादी के बाद विशेष रूप से 60 के बाद के भारत की तस्वीर प्राप्त होती है उनकी समूची काव्य यात्रा का केंद्रीय लक्ष्य शोषण, अन्याय, हत्या,आत्महत्या, विषमता, दासता, राजनीतिक संप्रभुता और जाति धर्म भेद रहित समाज का निर्माण है।

प्रमुख रचनाएँ- दूसरा सप्तक सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, हंसो जल्दी हंसो (कविता संग्रह), रास्ता इधर से है (कहानी संग्रह), दिल्ली मेरा परदेश और लिखने का कारण (निबंध संग्रह)।

सम्मान- रघुवीर सहाय की कविता संग्रह 'लोग भूल गए है' के लिए उन्हें 1984 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया था।

सारांश

चौडी सड़क गली पतली थी
दिन का समय घनी बदली थी
रामदास उस दिन उदास था
अंत समय आ गया पास था
उसे बता यह दिया गया था उसकी हत्या होगी।

उ: प्रस्तुत कविता रघुवीर सहाय द्वारा रचित शासन और समाज की निष्क्रियता का सजीव चित्र है। रामदास अपने घर से निकल कर सड़क पर चल रहा था। जिस सड़क पर वह चल रहा था वह चौडी और उसके पास की गली पतली थी। दिन का समय था जब दुख के बादल छाए हुए थे। उस दिन रामदास निराशा के बादल में घिरा हुआ था क्योंकि उसकी अंतिम घड़ी निकट आ चुकी थी। किसी ने उसे उसकी हत्या के विषय में पूर्व ही खबर प्रदान कर दिया था।
आशय है कि यह आधुनिक युग अपराधों का युग है। अन्याय, शोषण, अत्याचार का मोहरा आम आदमी बने हुए है, जिसे समाज में विकसित अन्याय का विरोध करने के लिए भी अनुमति नहीं है।

धीरे धीरे चला अकेले
सोचा साथ किसी को ले ले
फिर वह रह गया, सड़क पर सब थे
सभी मौन थे सभी निहत्थे
सभी जानते थे यह उस दिन उसकी हत्या होगी।

उ: रामदास की हत्या के दिन वह घर से निकलकर धीरे-धीरे सड़क पर अकेले चल रहा था उसने सोचा कि वह किसी को अपने साथ लेकर चले लेकिन इसके पश्चात भी वह एकांत रह गया। सड़क पर उपस्थित सभी लोग शांत एवं अस्त्र विहीन थे। हालांकि सड़क पर चलने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पता था कि उसकी हत्या होगी।
आशय यह है कि वर्तमान समाज कायरों से भरा पड़ा है। कायर अपने स्वार्थ हेतु एवं अपने जीवन की रक्षा हेतु अन्याय का विरोध नहीं करता। लोगों की भी भिडूता ही किसी मासूम की बलि बना हुआ है।

खड़ा हुआ वह बीच सड़क पर
दोनों हाथ पेट पर रखकर
सधे कदम रख करके आये
लोग सिमटकर आंख गड़ाये
लगे देखने उसको जिसकी तय था हत्या होगी।

उ: रामदास बीच सड़क पर दोनों हाथ पेट पर रखकर खड़ा हुआ था। गरीबी का मार झेलते हुए आम जनता राजनीति के चक्र का मोहताज बना हुआ है। सड़क पर उपस्थित लोग सावधानी से कदम रखते हुए, जिसकी हत्या होगी उसको देखने लगे।

आशय यह है कि आधुनिक युग में गरीब होना सर्वोत्तम पाप है, गरीब होना अपराध है, जिसके कारण वह सामाजिक एवं राजनीतिक मोहरा बन जाता है। यंत्रीकरण के इस दौर में लोग एक दर्शक बनते जा रहे हैं जिसे तमाशा प्रिय है चाहे जिससे किसी की मौत क्यों न हो जाए।

निकल गली से तब हत्यारा
आया उसने नाम पुकारा
हाथ तौलकर चाकू मारा
छूटा लोहू का फव्वारा
कहा नहीं था उसने आखिर उसकी हत्या होगी।

उ: सड़क पर जब सब लोग रामदास अर्थात जिसका तय था हत्या होगी उसे देखने के लिए सिमटने लगे तब रामदास का हत्यारा गली से निकला और उसका नाम पुकारा। रामदास की पहचान करने के पश्चात हत्यारे ने हाथ साधकर उस पर चाकू का प्रकोप कर डाला। रक्त फव्वारे की भांति उसके शरीर से लहू लुहान होने लगा। रामदास की हत्या पहले से ही तय था। लोगों को इसकी जानकारी तक प्रदान कर दिया गया था।
आशय यह है कि अपराध एवं अंधे कानून के इस शहर में अपराधी अपनी विराटता का पहचान खुलेआम दे रहा है, परंतु उस अपराध का विरोध करने के लिए एक सच्चा इंसान नहीं है क्योंकि अब लोग सिर्फ तमाशा देखने वाले दर्शक बने हुए है।

भीड़ ठेलकर लौट गया वह
मरा पड़ा है रामदास यह
देखो देखो बार बार कह
लोग निडर उस जगह खड़े रहे
लगे बुलाने उन्हें जिन्हें संशय था हत्या होगी।

उ: रामदास का हत्यारा भीड़ को धकेलते हुए उस क्षेत्र से वापस अपने गंतव्य स्थान पर आ चुका था। सब पुतलियों की भांति मौन खड़े थे। गरीबी का मारा रामदास उसी बीच सड़क पर मृत्यु के कोख में गिरा पड़ा था। दर्शक की भांति लोग बार-बार हर एक दूसरे को बुलाते हुए कह रहे थे 'देखो देखो', जैसे की मृत्यु इस नरक वास में कोई तमाशा बन चुका है। रामदास की मृत्यु के पश्चात भी लोग निडर उसी जगह खड़े होकर एक दूसरे को बुलाने लगे जिन्हें संदेह था कि रामदास की हत्या होगी।
आशय यह है कि भ्रष्टाचार के इस युग में अपराध की मात्रा अपने चरमोत्कर्ष पर है। अपराधी दिनदहाड़े अपने अपराध को सफलता प्रदान कर रहे है। लेकिन उसका विरोध करने हेतु एक भी पौरुष बचा नहीं है। सब अपने प्राण को संजोने, उसे संभालने के खातिर व्यस्त है। समाज में विकसित अन्याय से आधुनिक इंसान को कोई मतलब नहीं है। मृत्यु तो इस रंगमंच का एक तमाशा बनकर रह गया है, जिससे अपराध की मात्रा अधिक विकसित हो रहे है।

<u>शब्दार्थ</u>
निहत्थे- अस्त्र विहीन, तौलकर- साधकर, लहू- रक्त, आखिर- अंत में, संशय संदेह।

<u>लघु प्रश्न</u>

१) घनी बदली से क्या आशय है?
उ: घनी बदली अर्थात दु:ख, संत्रास का बादल, मृत्यु से भयभीत त्रासदी का बादल।

२) हत्यारा किस प्रकार रामदास की हत्या की?
उ: हत्यारा ने रामदास की हत्या हाथ तौलकर चाकू मारकर किया।

३) रामदास किसका प्रतीक है?
उ: रामदास गरीबी का मारा सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्रों में पिछड़ा हुआ व्यक्ति का प्रतीक है।

४) "दिन का समय घनी बदली थी।"
क) प्रस्तुत पंक्ति किस पाठ से उद्धृत है?
ख) इस पंक्ति का मूल भाव पर प्रकाश डालिए।

उ: क) प्रस्तुत पंक्ति 'रामदास' पाठ से उद्धृत है।
ख) दिन का समय रामदास को पता था कि उसकी मृत्यु होने वाली है। हत्यारे में उसे पहले ही खबर दे दिया था। अपने घर वालों को, अपने परिवार वालों को बचाने हेतु वह बीच सड़क पर खड़ा हुआ। दिन का समय था लेकिन बादलों के कारण पूर्ण संसार काली अंधेरे में च चुकी थी उसी दिन मृत्यु की आग में पूरी तरह से झुलस रहा था, उसके हृदय में संत्रास, आतंक का बादल पूर्ण रूप से फैला हुआ था।

५) रामदास कविता का मूल आशय संक्षिप्त में लिखिये?

उ: मशीनों वाली समृद्धि प्रदेश में मनुष्य का विवेक नैतिकता, इंसानियत इसी तकनीकी के नीचे कुचल रहे है। आधुनिकता मनुष्य के अंदर अमानवीयता को बढ़ावा दे रहा है, जिससे समाज में अपराधों की मात्रा अधिक हो गया है। अपराधियों से मुकाबला करने के बजाय उससे भयभीत हो रहे हैं और उससे अपनी कायरता को परिलक्षित कर रहे है। ऐसी कायरता के कारण गरीबों का गला घोट आ जा रहा है।

Teacher's Name - Riya Saha